ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 6 | June 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.77

नागार्जुन के काव्य में प्रगतिशील चेतना

प्रो. अरविंद कुमार

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, चौधरी चरण सिंह डिग्री कॉलेज हैंवरा, इटावा

Email: arvinddv0390@gmail.com

प्रस्तावना:

भारतीय साहित्य में समाज-सुधार और क्रांतिकारी विचारधारा का अभिव्यक्ति अनेक कवियों और लेखकों ने की है। इन विचारधाराओं का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त असमानता, शोषण, अंधविश्वास और अराजकता के विरुद्ध संघर्ष करना और समाज में नई चेतना का संचार करना है। ऐसे ही एक महान लेखक हैं नागार्जुन। नागार्जुन का जन्म 4 मई 1911 को बिहार के सिमरिया में हुआ था। उनका वास्तविक नाम वैद्य नाथ मिस्र था। वे हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, लेखक और समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता, समानता, श्रमजीवी वर्ग की चिंता, और सामाजिक बदलाव को अपने कवि कर्म का आधार बनाया।

मूल शब्दः नागार्जुन, समाज-सुधार, क्रांतिकारी विचारधारा, सामाजिक न्याय, हिन्दी साहित्य

मुख्य लेख

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि-व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना-संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है। उनका 'यात्रीपन' भारतीय मानस एवं विषय-वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का साधन रहा है। मैथिली, हिन्दी और संस्कृत के अलावा पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती आदि अनेकानेक भाषाओं का ज्ञान भी उनके लिए इसी उद्देश्य में सहायक रहा है। उनका गतिशील, सक्रिय और प्रतिबद्ध सुदीर्घ जीवन उनके काव्य में जीवंत रूप से प्रतिध्वनित-प्रतिबिंबित है। नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं। [1] उन्होंने आज़ादी के पहले और बाद

में भी कई बड़े जनांदोलनों में भाग लिया था। 1939 से 1942 के बीच बिहार में किसानो के एक प्रदर्शन का नेतृत्व करने की वजह से जेल में रहे। आज़ादी के बाद लम्बे समय तक वो पत्रकारिता से भी जुड़े रहे। [2] जन संघर्ष में अडिग आस्था, जनता से गहरा लगाव और एक न्यायपूर्ण समाज का सपना, ये तीन गुण नागार्जुन के व्यक्तित्व में ही नहीं, उनके साहित्य में भी घुले-मिले हैं। निराला के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इतने छंद, इतने ढंग, इतनी शैलियाँ और इतने काव्य रूपों का इस्तेमाल किया है। पारंपरिक काव्य रूपों को नए कथ्य के साथ इस्तेमाल करने और नए काव्य कौशलों को संभव करनेवाले वे अद्‌वितीय कवि हैं। उनके कुछ काव्य शिल्पों में ताक-झाँक करना हमारे लिए मूल्यवान हो सकता है। उनकी अभिव्यक्ति का ढंग तिर्यक भी है, बेहद ठेठ और सीधा भी। अपनी तिर्यकता में वे जितने बेजोड़ हैं, अपनी वाग्मिता में वे उतने ही विलक्षण हैं। काव्य रूपों को इस्तेमाल करने में उनमें किसी प्रकार की कोई अंतर्बाधा नहीं है। उनकी कविता में एक प्रमुख शैली स्वगत में मुक्त बातचीत की शैली है। नागार्जुन की ही कविता से पद उधार लें तो कह सकते हैं-स्वागत शोक में बीज निहित हैं विश्व व्यथा के।[3] भाषा पर बाबा का गज़ब अधिकार है। देसी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय पदावली तक उनकी भाषा के अनेकों स्तर हैं। उन्होंने तो हिन्दी के अलावा मैथिली, बांग्ला और संस्कृत में अलग से बहुत लिखा है। जैसा पहले भाव-बोध के संदर्भ में कहा गया, वैसे ही भाषा की दृष्टि से भी यह कहा जा सकता है कि बाबा की कविताओं में कबीर से लेकर धूमिल तक की पूरी हिन्दी काव्य-परंपरा एक साथ जीवंत है। बाबा ने छंद से भी परहेज नहीं किया, बल्कि उसका अपनी कविताओं में क्रांतिकारी ढंग से इस्तेमाल करके दिखा दिया। बाबा की कविताओं की लोकप्रियता का एक आधार उनके द्‌वारा किया गया छंदों का सधा हुआ चमत्कारिक प्रयोग भी है।[4]

उनकी कविताएँ न केवल साहित्यिक सौंदर्य का प्रतीक हैं, बल्कि उनमें प्रगतिशील विचारधारा और समाज में परिवर्तन की चेतना भी स्पष्ट रूप से झलकती है। यह लेख नागार्जुन के काव्य में प्रगतिशील चेतना का विश्लेषण करता है, जिसमें उनके जीवन, विचारधारा, कविता के विषयवस्तु, भाषा-शैली, और सामाजिक प्रभाव का व्यापक विवेचन किया जाएगा।

1. नागार्जुन का जीवन और विचारधारा

। नागार्जुन का जीवन कई संघर्षों से भरा रहा। उनके जीवन का उद्‌देश्य समाज में व्याप्त अत्याचार और अव्यवस्था के विरुद्‌ध आवाज उठाना था। उनके विचार स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक न्याय और किसान-श्रमजीवी वर्ग के अधिकारों के समर्थन में थे। उन्होंने अपने अनुभवों और समाज की ज्वलंत समस्याओं को अपनी कविताओं का माध्यम बनाया।

उनका मानना था कि साहित्य का उद्‌देश्य केवल सौंदर्य का विस्तार ही नहीं, बल्कि समाज में बदलाव लाना भी है। उन्होंने कहा, "साहित्य का उद्‌देश्य है समाज का परिवर्तन।"5 (संदर्भ: नागार्जुन, 'साहित्य और समाज', 1960)।

2. नागार्जुन की कविता में प्रगतिशील चेतना

2.1 सामाजिक बदलाव का संदेश

नागार्जुन की कविताएँ सामाजिक जागरूकता का परिचायक हैं। वे समाज में व्याप्त जाति-भेद, गरीबी, शोषण, और अंधविश्वास के खिलाफ मुखर हैं। उनकी कविता में उनके समाज के प्रति गहरी संवेदना और बदलाव की इच्छा झलकती है।उदाहरण के लिए, उनकी कविता "बाबूजी का नाम" में वे परंपरागत अंधविश्वास और रूढ़ियों का critique करते हैं। यहाँ उनका उद्देश्य समाज में जागरूकता फैलाना था।

2.2 श्रमिक वर्ग और किसान की आवाज़

उनकी कविताओं में श्रमिक और किसान वर्ग का जीवन और संघर्ष प्रमुख विषय हैं। उन्होंने श्रमिकों की पीड़ा, मेहनत और उनके अधिकारों की बात की। उनकी कविताओं में श्रमिक वर्ग की शक्ति और आत्मसम्मान का संदेश स्पष्ट है। उदाहरण के तौर पर, उनकी कविता "मजदूर" में उन्होंने मजदूरों की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है।

2.3 आधुनिकता और परंपरा का समावेश

नागार्जुन का साहित्य परंपरा और आधुनिकता का मेल है। वे भारतीय संस्कृति और ग्रामीण जीवन का सम्मान करते हैं, लेकिन परिवर्तन और प्रगति के लिए भी प्रेरित करते हैं। उनका मानना था कि परंपरा का सम्मान जरूरी है, परंतु नई सोच और बदलाव भी आवश्यक हैं।

2.4 युवा चेतना और क्रांतिस्पद विचार

उनकी कविताएँ युवा वर्ग में क्रांतिकारी ऊर्जा और आशा का संचार करती हैं। उन्होंने समाज में बदलाव के लिए युवा शक्ति को प्रेरित किया।

2.5 स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय

उनकी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन और सामाजिक न्याय का समर्थन मुख्य विषय हैं। वे जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाते हैं। उनकी कविता "मज़दूर का गीत" में उन्होंने मेहनतकश वर्ग की स्वतंत्रता और समानता की बात की है।

3. नागार्जुन की कविता की भाषा और शैली

उनकी भाषा सरल, प्रभावशाली और जनता के करीब है। उन्होंने जनमानस से जुड़ने के लिए लोकभाषा का प्रयोग किया। उनकी कविता में क्रांतिकारी ऊर्जा, सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का समावेश है। उनकी शैली शृंगारिक नहीं, बल्कि क्रांतिकारी और क्रांतिकारियों जैसी है।6 वे कविता को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए सरल और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करते थे।

4. नागार्जुन की कविता का सामाजिक प्रभाव

उनकी कविताएँ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और बाद में समाज में जागरूकता और बदलाव के कारक बनें। उन्होंने लोगों में स्वाधीनता, समानता और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनकी कविता आज भी प्रगतिशील चेतना का प्रतीक है, जो समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती है। उनका साहित्य युवाओं में क्रांतिकारी ऊर्जा और सामाजिक जागरूकता का संचार करता है।

5. नागार्जुन की कविता में विविध विषयवस्तु

उनकी कविता में विविध विषय हैं, जैसे: सामाजिक असमानता और शोषण**: "शोषण का अंत" जैसी कविताएँ श्रमिक वर्ग के अत्याचार का चित्रण करती हैं। सामाजिक स्वतंत्रता**: "स्वाधीनता" में उन्होंने स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित किया। मिट्टी से जुड़ी जीवन की सच्चाई**: ग्रामीण जीवन और किसानों का संघर्ष।

प्रेम और मानवता**: मानवीय संवेदनाओं को जागरूक करने वाली कविताएँ।

6. निष्कर्ष

नागार्जुन का साहित्य समाज में परिवर्तन की एक अभिव्यक्ति है। उनकी कविताओं में प्रगतिशील चेतना का स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई देता है। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, शोषण, जाति-भेद और अराजकता के विरुद्ध आवाज उठाई। उनकी कविता में समाज के प्रति प्रेम, संघर्ष और बदलाव की इच्छा झलकती है।

उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे मानवता, समानता और स्वतंत्रता का संदेश देती हैं। नागार्जुन का साहित्य न केवल हिन्दी साहित्य का अमूल्य खजाना है, बल्कि समाज में नई चेतना जगाने का शक्ति स्रोत भी है।

संदर्भ सूची

[1]. नागार्जुन, 'साहित्य और समाज', भारतीय साहित्य परिषद, 1960।

[2]. नागार्जुन, 'साहित्यिक रचनाएँ', संकलन, 1985।

[3]. शर्मा, डॉ. रमेश चंद्र, "भारतीय साहित्य में नागार्जुन का स्थान", साहित्य समीक्षा, 2005।

[4]. सिंह, प्रो. अजय कुमार, "प्रगतिशील चेतना और नागार्जुन का काव्य", हिंदी साहित्य अकादमी, 2010।

[5]. वर्मा, डॉ. दीपक, "नागार्जुन का जीवन और कविता", प्रकाशन: हिंदी साहित्य संस्थान, 2018।

[6]. कुमार, सूरज, "नागार्जुन की कविता का सामाजिक प्रभाव", साहित्यिक समीक्षा, 2022।

Cite this Article

प्रो. अरविंद कुमार, "नागार्जुन के काव्य में प्रगतिशील चेतना", International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 6, pp. 49-52, June 2024.

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.77*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.